रिकॉर्ड :– इनसाफ की डगर पे... ॐ पिताश्री 9/4/63

ओम् शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कौन–सा बाप? तुम सभी का बाप है शिवबाबा। वो तुम्हें श्रीमत समझा रहे हैं। श्रीमत और आसुरी मत गीता में अच्छी समझाई हुई है। 3 सेनाएँ भी समझाई हुई हैं। दो हैं आसुरी मत पर चलने वाले और तीसरे हैं श्रीमत पर चलने वाले। श्रीमत को कहा जाता है– सर्वशक्तिवान की मत। उस सर्वशक्तिवान से बच्चों को शक्ति मिल रही है; इसलिए नाम ही पड़ा है– शिवशक्ति, फिर सेना भी कहा गया है। शिवशक्ति सेना और पाण्डव सेना एक ही है। उन्हों का ... बुद्धियोग सर्वशक्तिवान से होने कारण उनको शक्ति सेना कहा जाता है। सर्वशक्तिवान के साथ जिनका योग नहीं, उनको शक्ति आवे ही कहाँ से! सभी नास्तिक, हिंसक हैं। बाबा ने समझाया है– हिंसा भी दो प्रकार की होती है। एक है, विख खिलाने की हिंसा, दूसरी है, बाहुबल से मारने की हिंसा। शिवशक्ति सेना तो दोनों बातों में अहिंसक है। तो यह सिद्ध करना पड़ता है कि तीन सेनाएँ हैं। यादव और कौरव– इन दो सेनाओं में शक्ति न है; क्योंकि सर्वशक्तिवान से योग न है तो शक्ति नहीं आती। 5 विकारों पर जीत नहीं पहन सकते। यह हरेक बात समझने की है। ऐसे भी बहुत बच्चे हैं, जिनके पास बिल्कुल ठहरती नहीं है। इसमें लाइन क्लीयर चाहिए। बाप समझाते हैं कि आधा कल्प भक्तिमार्ग में तुम पिर्ण(प्रण) करते आए हो कि बाप पर बलिहार जाऊँ, एक से योग लगाऊँ, दूसरा न कोई। कोशिश की है मिलने की; परन्तु मिल न सके। अब खुद कहते हैं– मैं आया हूँ परीक्षा लेना(लेने)। तुम बच्चे मुझ परमपिता प० साथ पूरा योग रखते हो। मेरी मत पर चलते हो। बहुत बच्चे मूँझ जाते हैं, पता नहीं यह शिव की मत है वा ब्रह्मा की मत है। बुद्धिवान जो है वो फिर भी समझ जाते हैं। अच्छा, ब्रह्मा की मत भी तो मशहूर है ना। तुम जानते हो, शिव की मत भी है और ब्रह्मा की भी है; क्योंकि फिर भी मुरब्बी बच्चा है। तो तुम बच्चे जानते हो, सर्वशक्तिवान से योग रखने से माया पर जीत पाने की शक्ति मिलती है। योग नहीं तो शक्ति मिल न सके। अब श्रीमत मिलती है जिनका योग है। योग और ज्ञान की शक्ति है। ज्ञान तो बिल्कुल प्रत्यक्ष है। जो ज्ञान देते हैं उनको ज्ञानी तू आत्मा कहेंगे। बाकी योग है गुप्त; क्योंकि योग में चुप रहना पड़ता है। ज्ञान में तो बोलना पड़ता है, चुप रहने में क्या पता कि योग लगाते हैं वा नहीं। सो तो वो बाप जाने। ज्ञानी को तो सभी जान जावेंगे। ज्ञान में पक्का व्यास चाहिए। व्यास और सुखदेव का अर्थ भी शास्त्रों में ठीक नहीं। सुखदेव अर्थात् सुख देने वाला। सदाशिव है, सदा सुख देने वाला। किसको? जो सुखदेव के बच्चे व्यास हैं; क्योंकि वो ही सच्ची गीता सुनाते हैं। वो व्यास तो झूठी गीता सुनाकर गया। उनको कहते हैं– भगवान का बच्चा व्यास था। भगवान के बच्चे तो अभी हम बने हैं। बाकी वो शास्त्र तो द्वापर से बने, उस समय भगवान कहाँ, फिर सुखदेव के बच्चे व्यास कहाँ! अच्छा, यह तो बच्चे समझ गए कि योग है गुप्त और ज्ञान है प्रत्यक्ष। मुरली तो ज़रूर बजेगी ना! अब एक तो शक्ति चाहिए, दूसरा ज्ञानी तू आत्मा चाहिए। पूरा योग न होने से शक्ति नहीं मिलेगी, माया पर जीत न पाए सकेगी। यह तो बच्चे भी समझते हैं, नम्बरवार हैं। फिर भी बाप महारथियों को ललकार करते हैं। महिमा है शक्तियों की और महारथी पाण्डवों की भी महिमा है। अभी बाप कहते हैं– एक काम युक्ति से करो, गीता को खण्डन किया हुआ है, बाप का नाम ही गुम कर दिया है, तो इस बात को उठाना चाहिए। इसमें भी बड़ा अच्छा दिमाग चाहिए। तुम देखते हो उस इलम वाले कितने खरे–तरे हैं, उन्हों की चलन, बीहक आदि जैसे मिलेट्री की होती है। तुम्हारे में भी वो शक्ति होनी चाहिए। अजन वो आई नहीं है; जैसे फिलरे। वो नशा न है। भल वो जिस्मानी ताकत वाले हैं; परन्तु रूहानी में भी ताकत आनी चाहिए, दिमाग पुर रहना चाहिए। बाबा कहते हैं– लॉ मिनिस्टर्स आदि को पकड़ो। एक कमेटी बनाओ, जिनमें अच्छे2 हो। दो सेनाएँ हैं। वो है हिंसक और यह तुम्हारी है अहिंसक। वो भारत माताएँ दोनों बात में हिंसक है। विकारों में जाते हैं, तो बाहुबल भी सीखती हैं। तुम भारत माताएँ हो अहिंसक। देवताओं को अहिंसा परमोधर्म था, कब लड़ते न थे। वहाँ माया ही नहीं थी, न काम–क्रोध था।

क्रोध से ही लड़ाई होती है। काम तलवार और क्रोध भी तलवार है। वहाँ दोनों हिंसा नहीं है। यहाँ भारतवासी कौरव सेना की भारत माताओं में दोनों हिंसाएँ हैं– देश को दुश्मन से बचाने लिए वो लड़ाई भी सीखती है और तुम भी भारत माताएँ हो; परन्तु तुम दोनों तरफ अहिंसक हो– न काम तलवार है, न हिंसा करते हो। तुम हो नॉन वाइलेंस। यह शक्ति तुम लेते हो सर्वशक्तिवान से। उनमें तो कोई शक्ति नहीं। तुम्हारा योग है सर्वशक्तिवान से। उनका योग न है तो वो मारे जाते और तुम्हारी विजय होती है। तुम्हारे में जो महारथी है उन्हों को खड़ा होना है। मम्मा–बाबा तो मैदान में नहीं आवेंगे। डॉटर शोज़ जगदम्बा। शक्ति सेना की हेड मम्मा है। बरोबर तुम शिवशक्ति कहलाती हो। मु(ख्य) हुई जगदम्बा। तो उनको अपनी कॉनफ्रेन्स करनी चाहिए। वो लोग भी बड़े–2 जनरल्स, एम.पी. आदि से मिल कर राय लेते हैं। यहाँ तो तुम अणपढ़ हो। महारथी पाण्डव भी थोड़े है। दोनों हैं एक माँ–बाप के बच्चे। तो फिर ऐसे महारथियों की कॉनफ्रेन्स करनी चाहिए। देखो, बाबा डायरैक्शन देते हैं– जल्दी–2 सर्विस कैसे बढ़ानी चाहिए। अभी तो चींटी मार्ग चल रहा है– भाषण किया, सुनकर चले गए, कोई विरला ठहरा। यह चींटी मार्ग कहाँ तक चलेगा! बाबा बहुत समय से राय देते हैं विहिंग मार्ग की; परन्तु बच्चे करते नहीं। तो समझते हैं शायद अजन देरी है। अजन 25% भी शक्ति न आई है। कुछ करके नहीं दिखाते हो। बच्चे कुछ करके दिखावेंगे तो बाप खुश होंगे और मदद भी देंगे। गीता को खण्डन कर दिया है। यह है मोस्ट सिम्पल बात। सर्वशास्त्रमई है गीता। यह सुनकर सभी बहुत खुश होंगे। कोई भी अपने बाप को नहीं जानते हैं; परन्तु 25% शक्ति होने कारण यह प्वाइंट अजन कोई की बुद्धि में नहीं बैठती। जब 50% होंगे तब शायद आवाज़ करेंगे। मु(ख्य) बात है ही गीता की। बाकी तो सभी हैं उनके बाल–बच्चे। गीता तो गुम हो गई है। फिर उपनिषद–वेद आदि सभी निकल पड़े हैं। वेद–उपनिषद आदि गाड़ियों में उठाए प्रकर्मा(परिक्रमा) देते हैं, बहुत प्रचार करते हैं। भगवान की गीता पर कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो अब तुमको क्या करना चाहिए। लॉ को उठाना चाहिए। लॉ का बड़ा जो चीफ जस्टिस है, वो भी तुमको जानता है; परन्तु बच्चे इतनी मेहनत नहीं करते हैं; क्योंकि योग कम है। काम का अथवा क्रोध का हल्का नशा है। फैमिलेरिटी भी बहुतों में है। कुछ खामी है, जब वो निकले तब कुछ आँखें खुले। एक कहानी भी जनक की है। यह भी शास्त्र वालों ने बैठ रिसर्च किया है। बातें हैं सभी संगमयुग की। शास्त्र तो लिखे हैं द्वापर में। तो फिर जो आया है सो लिख दिया है। जैसे हातिमताई का नाटक, अल्लाह अव्वलदीन का नाटक बनाया है। बहुतों ने रिसर्च की है। और ही उल्टा नावेल बना दिया है। फिर भी उनसे कुछ न कुछ निकलता है। अभी रिसर्च कर रहे हैं मून में जावें; परन्तु वहाँ कोई जाय थोड़े ही सकते। गीता है संगमयुग की। उन्होंने तो शास्त्र बनाए, अगड़म–बगड़म डाल दिया है। ताकत नहीं है। सर्वशक्तिवान तो है शिवबाबा, कृष्ण को कह नहीं सकते। सर्वशक्तिवान है गॉड, जो जन्म–मरण से न्यारा है। उसके बदली 84 जन्म लेने वाले कृष्ण का नाम ठोक दिया। तो शक्ति आवे कहाँ से! गीता पढ़ने से कुछ भी मज़ा नहीं आता। पढ़ते–2 जीवनमुक्ति तो दूर रही, और ही नर्कवासी बन पड़े। अब ऐसी–2 बातें कोई अमल में लाते नहीं हैं। आपस में मिलने का भी ढंग नहीं आता। कौरव सेना तो आपस में मिलती है। वह तो बहुत हैं और पुराने हैं। यह फिर हैं नई और हैं फिर देखो, कैसी अहिल्याएँ, कुब्जाएँ! उनको ललकार करने वाला भी कोई चाहिए। कोई की .... बीमार है तो उनके पिछाड़ी बीमार थोड़े ही बनना है। बीमार की सेवा में रहने वाला भी बीमार ही ठहरा। फिर उसका जीवन कब बनेगा! तो उन्हों को ललकार करना चाहिए। शिवबाबा कहते हैं, आजकल करते–2 काल खा जावेगा, फिर तो खेल खतम हो जावेंगे। समझते हैं, हमको काल नहीं खावेगा; परन्तु आजकल मालूम थोड़े ही पड़ता है। अचानक अर्थक्वेक हो तो हज़ारों मर जाय। आफतें पूछ थोड़े ही आती हैं। आज तूफान लगा, आज यह हुआ, कितने मर जाते हैं। अभी तो मौत की इत्तफ़ाक घड़ी–2 आती रहेंगी। उसी समय तो कुछ कर न सकेंगे। जबकि समझते हैं मोस्ट बिलवेड बाप है तो उनका हाथ कब नहीं छोड़ना चाहिए। माया ऐसी

है जो छोटी–2 बच्चियाँ भी गन्दी बन पड़ती हैं। काम विकार इतना कड़ा है। एक ही घूसा मारने से एकदम खाना खराब कर देते हैं। बहुत ऐसे गुप्त इत्तफ़ाक होते हैं। एकदम कुल–कलंककित बन जाते हैं। एक बार शिवबाबा का बन, सर्वशक्तिवान बाप अथवा साजन, धर्मराज से प्रतिज्ञा करते हैं– हम आपकी ही मत पर चलेंगे, कब विकार में न जावेंगे, फिर भी ऐसे साजन को फारकती दे देते। कितना मोस्ट बिलवेड बाप है! उनको तो पूरा याद करना चाहिए। बाबा कहते हैं– अजन 25% लव है। बहुत काम चाहिए। अगर हम 100% कहें तो फिर विनाश हो जाय। विवेक कहते हैं अजन वो ताकत न है शक्ति सेना में। तुम्हारा नाम पिछाड़ी में ही गाया हुआ है– शिवशक्ति सेना। पुरुषार्थ में तो भूले बहुत होती रहती हैं। बाप कहते– भूले मत करो। ऐसे बाप साथ तो पूरा लव होना चाहिए। बहुतों के हृदय विदीर्ण होते हैं, मोह के तो जैसे कीड़े हैं; इसलिए पूरी धारणा नहीं होती है। योग नहीं, मित्र–संबंधी याद पड़ते रहते। नतीजा क्या होता है! बाहर वाले कहते हैं– यह औरों को स्वर्ग का रास्ता बताते हैं; परन्तु खुद तो नर्क वासियों को याद करते रहते। यहाँ तो स्वर्ग को और स्वर्ग में ले जाने वाले शिवबाबा को याद करना है। भक्तिमार्ग में भी कई बहुत अच्छे पढ़े–लिखे होते हैं, समझते हैं– आत्मा ने एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लिया, फिर रोने की क्या दरकार है! यहाँ तो फिर ज्ञान से मस्ती चढ़ जाती है– ओहो! हमारा बाबा कैसा है! दिन–रात बाबा को याद करते रहे तो ताकत भी मिले; परन्तु करते नहीं हैं। इसलिए बाबा राय देते हैं– बच्चों का संगठन होना चाहिए, खास देहली वालों के लिए बाबा कहते हैं। वहाँ बड़े जज आदि हैं, उनको पकड़ना चाहिए। गीता को खण्डन करने कारण भारत की सत्यानाश हुई है। मैं अगर विलायल जाऊँ तो बहुत शोर करूँ– यह जो भारत के सन्यासी आदि यहाँ आते हैं उन सभी ने तुम्हारा बेड़ा गर्क किया है। कोई को भी पता न है गीता का प्रीसेप्टर कौन है। वो तुमको झूठ बतलाए माथा मूड जाते हैं। जानते कुछ भी नहीं। अरे, गीता का भगवान तो तुम्हारा बाप है। उनको न जानने कारण तुम निधणके बन पड़े हो, शक्ति न रही है। भारत में ही बाबा का जन्म होना है। भुलाया है इन शास्त्रों ने और गुरु लोग ने। हैं सब झूठ। भारत का प्राचीन सहज योग–ज्ञान कोई भी नहीं जानते। गीता के भगवान को ही नहीं जानते; इसलिए भारत इतना कंगाल बना है। न अपने धर्म को, न धर्म स्थापन करने वाले को जानते। ऐसी ललकार करनी चाहिए। तीन सेनाएँ दिखाओ। कोई का भी बुद्धियोग गीता के भगवान साथ नहीं है। यादव और कौरव दोनों का योग नहीं तो नतीजा क्या हुआ? विनाश को प्राप्त हुए। जिनका योग था उन्हों की विजय हुई। अभी तुम परमपिता प० की मददगार बनने चाहती हो तो इस बात को उठाओ। गीता में भगवान के बदली कृष्ण का नाम डाल दिया है। जो कृष्ण 84 जन्म लेते हैं, इस समय तो वो पतित है। भगवान कभी पतित नहीं बनते। तो इस समय जो कोई का पूरा ध्यान नहीं जाता है, फिर सभी का ध्यान जावेगा और तुम्हारा नाम बाला हो जावेगा। ऐसे और तो कोई केस कर न सके। समझेंगे, इन्होंने केस करने की हिम्मत दिखाई है। ज़रूर कुछ बात में है। गीता जो सभी शास्त्रों का माई–बाप है उनको ही खण्डन किया हुआ है। बाबा कहते, नाम बाला करना है तो इस बात को उठाओ। बाबा की मुरली सुनते तो सभी हैं; परन्तु अजन तो बन्दर पणे से 25% मंदिर पणे के लायक बने हैं। 75% अजन सीखना है; इसलिए बाबा जगाते रहते हैं। बुद्धि में बैठता नहीं; जैसे मनुष्य नींद से उठते हैं तो झुटका खाते हैं ना! ऐसे तुम्हारा नाम निकल जाय, तो फिर जो डिस्ट्रक्टिव काम कर... नाम बदनाम कर देते हैं, वो न होगा, समझ जावेंगे। इनमें भी नम्बरवार हैं। फिर बी.के. का नाम बहुत बाला हो जावेगा। सर्विस में बहुत खराई आनी चाहिए। देहली में बड़ों–2 को पकड़ना चाहिए। जैसे शिव जयन्ती का मैंमोरेडम भेजा था; परन्तु कुछ भी कोई ने समझा नहीं। नींद से ऐसे थोड़े ही जागेंगे। फिर केस करना चाहिए, तो आवाज़ ज़ोर से होगा। यह भी मशहूर है। निमंत्रण मिला; परन्तु फेंक दिए। अन्त में जागेंगे। जनक का भी मिसाल है– उनको ब्रह्मा ज्ञान कोई ने नहीं दिया, फिर सभी ब्राह्मणों को जेल में डाल दिया। यह बैठ रिसर्च किया है। अभी जेल में तो सभी मुर्दे पड़े हुए हैं। ब्रह्मा ज्ञान तो कोई में है नहीं। ब्रह्म ज्ञान सुनाते हैं– अहम ब्रह्म अस्मि आदि.... अभी तुम्हारे सिवा(य) ब्रह्मा ज्ञान कोई में नहीं है। शिव–शक्तियाँ तुम हो तो ज़रूर ब्रह्मा ज्ञान बी.के. ही देगी। ॐ